पद का अर्थ, निर्माण की प्रक्रिया एवं महत्त्व

भाषा-व्यवहार की मूल इकाई वाक्य है और वाक्यों का गठन पदों से होता है। किसी भी भाषा में दो प्रकार के शब्द होते हैं। संस्कृत में इन्हें प्रकृति और प्रत्यय कहते हैं तथा भाषा विज्ञान में इन्हें अर्थतत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व कहते हैं। किसी भी भाषा में जो शब्द उपस्थित होते हैं, वे इन्हीं दोनों का संयुक्त रूप होता है। अयोगात्मक भाषाओं में ये दोनों अलग-अलग होते हैं जबकि योगात्मक भाषाओं में संबंधतत्त्व से जुड़कर अर्थतत्त्व होते हैं। इस तरह अयोगात्मक भाषाओं में पद का शब्द से भिन्न अर्थ नहीं होता किन्तु योगात्मक भाषाओं में पद वह है, जहाँ शब्द को वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य बनाया जाता है।

स्पष्ट है कि अर्थतत्त्व वाले शब्द संबंध-तत्त्वों के साथ होकर पद बनते हैं। यह निर्माण अनेक प्रकार से होता है। जैसे -

(1) शब्द-स्थान द्वारा - स्थान परिवर्तन से संबंध तत्त्व बदलता है और अर्थ भी बदल जाता है, जैसे - धनपति (धन का स्वामी) और पतिधन (पति की सम्पत्ति)

(2) शून्य सम्बन्ध तत्त्व द्वारा - दिखने में मूल शब्द ही वाक्य में आता है, किन्तु वह संबंध तत्त्व से युक्त होता है, जैसे राम गया। यहाँ 'राम' में कर्ता-एकवचन का संबंध-तत्त्व निहित है।

(3) स्वतंत्र शब्द - वाक्य में अर्थतत्त्व से बिना जुड़े स्वतंत्र रूप से संबंधतत्त्व आते हैं। जैसे - राम ने मोहन को मारा। यहाँ 'ने' और 'को' परसर्ग स्वतंत्र शब्द हैं।

(4) ध्वनि प्रतिस्थापन - केवल ध्वनि के बदल देने से संबंध तत्त्व स्पष्ट हो जाते हैं, जैसे - चाचा - चाची। 'आ' ध्वनि 'ई' ध्वनि में बदल गयी है।

(5) ध्वनि द्विरावृत्ति - ध्वनि को दुहराकर भी पद-निर्माण होता है, जैसे अफ्रीका की एक भाषा में irik (चलना) और irikrik (वह चलता है) प्रयुक्त है।

(6) ध्वनि-योजन - ध्वनि को बढ़ा या घटा देने से भी पद-निर्माण किया जाता है, जैसे फ्रांसीसी भाषा में ptit (छोटी) और pti (छोटा) प्रयुक्त है।

(7) पूर्वप्रत्यय - मूल शब्द के पहले संबंध तत्त्व को जोड़ा जाता है, जैसे संस्कृत में भूतकालीन क्रियाओं में 'अ' लगा देते हैं - अगच्छत (गया)।

(8) मध्यप्रत्यय - मूलशब्द के बीच संबंध तत्त्व जोड़ा जाता है, जैसे मुंडा भाषा में मंझि (मुखिया) और मपंझि (मुखिया लोग)।

(9) अंतप्रत्यय - मूलशब्द के अन्त में संबंध तत्त्व जोड़कर पद-निर्माण होता है, जैसे - अंग्रेजी में eat - eating।

(10) बलाघात या सुर – किसी शब्द के किसी ध्वनि पर अतिरिक्त बल दे देने से अर्थ बदलते हैं और पद-निर्माण होता है, जैसे – अंग्रेजी शब्द Present की 'र' ध्वनि पर बल देने से यह संज्ञा-~~शब्द~~ पद तथा 'ज़े' ध्वनि पर बल पड़ने से क्रिया-पद बनता है।

पद-निर्माण की प्रक्रिया में संबंध-तत्वों में परिवर्तन भी प्रायः भाषाओं में दिखते हैं। ये अनेक रूपों में होते हैं, जिनमें पुराने की जगह नये रूपों का आना, सादृश्यता के कारण नये रूप का निर्माण, अतिरिक्त प्रत्यय का प्रयोग, गलत प्रत्यय का प्रयोग, मूल शब्द में परिवर्तन आदि हैं। जैसे रामस्य - राम का, कीजिए - करिए, अनेक - अनेकों, मुझको - मेरे को आदि - आदि।

वस्तुतः विश्व की भाषाओं में पद का महत्त्व असंदिग्ध है। ~~कोई~~ किसी भी वाक्य में शब्द बिना पद बने भाषा का अंग नहीं बनते। भाषा में सम्बन्धतत्व मुख्यतः काल, लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि की अभिव्यक्ति करते हैं, जिसके बिना कोई भाषा अपेक्षित अर्थ का सम्प्रेषण नहीं कर पाता। संबंधतत्व इन्हें इसलिए कहा जाता है कि ये वाक्य में आए विभिन्न पदों का एक दूसरे से संबंध का निर्धारण करते हैं।